**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232**
**Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.hindijournal.com**
**Volume 4; Issue 3; May 2018; Page No. 15-17**

# वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गीता की प्रासंगिकता

**प्रमोद कुमार यादव**
शोधार्थी, हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत।

**प्रस्तावना**

मनुष्य के आज का वर्तमान जीवन जितना सुविधाओं से परिपूर्ण है, उतना ही बेचैनी, हताशा, निराशा, दुःख, असफलता और परेशानियों से भरा हुआ है। पाश्चात्य देशों की वैज्ञानिक एवं भौतिक प्रगति ने मनुष्य के विकास का जो वातावरण खड़ा किया है, जो मानक बनाया है, वह आज अधूरा सा हो गया। क्योंकि उसने मनुष्य के अंतर्मन को न समझकर सिर्फ़ बाहरी पहलू एवं उसके विकास को ही देखा है। आज का मनुष्य जो सुखी जीवन की बड़ी चाहत लिए खड़ा है, उसका मार्ग उसके कर्म में ही निहित है और उसे अपने कर्म के, जीवन के रहस्य एवं मर्म को जानने हेतु श्रीमद्भगवद्गीता की शरण में जाना पड़ेगा। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने लिखा है कि, "निराशा के घने अंधकार में जब मैं अकेला तथा असहाय हो जाता हूँ, और प्रकाश की एक भी किरण नहीं देख पाता हूँ; तब मैं भगवद्गीता की शरण में जाता हूँ, उसे उलट-पुलट कर एक श्लोक यहाँ –एक श्लोक वहाँ पढ़ता हूँ। और, गहन दुःखों के क्षणों में भी मैं तुरंत मुस्कराने लगता हूँ। मेरा जीवन बाह्य दुःखों से भरा हुआ है; फिर भी मुझ पर उन दुःखों का कोई गोचर तथा अमिट प्रभाव नहीं पड़ सका है। इसका एकमात्र कारण मैं भगवद्गीता के उपदेशों को ही मानता हूँ (यंग इंडिया, १९२५, पृ. १०७८-७९)[1]। जब मुझे कोई परेशानी घेर लेती है तो मैं गीता के पन्नों को पलटता हूँ।"[2] महान दार्शनिक श्री अरविंदों ने भी कहा है कि, "भगवद्गीता एक धर्मग्रंथ व एक किताब न होकर एक जीवन शैली है, जो हर उम्र के लोगों को अलग संदेश और हर सभ्यता को अलग अर्थ समझाती है।"[3]

किसी भी ग्रंथ की उपयोगिता अथवा उपादेयता इस बात पर निर्भर करती है कि वह हमें जीवन के इस चरम लक्ष्य तक पहुंचाने में कहाँ तक सहायक है? इस कसौटी पर श्रीमद्भगवद्गीता एकदम खरी उतरती है और युगों से वह अपनी सार्थकता सिद्ध करती आई है। मान्यता है कि श्रीमद्भगवद्गीता योगेश्वर श्रीकृष्ण की वाणी है जो द्वापर युग में महाभारत के युद्ध के समय रणभूमि में स्वजनों के प्रति मोहग्रस्त होकर कर्तव्यपथ से विचलित हो रहे अर्जुन को समझाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा कही गई थी। किंतु गीता का ज्ञान आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस समय था। "इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि गीता से संबंधित सामान्य मनुष्य के संदेहों को अर्जुन के प्रश्नों के माध्यम से उत्तरित करने का प्रयास किया गया है।"[4] वर्तमान में मनुष्य धन, स्वार्थ एवं भोग-विलास में इतना तल्लीन हो चुका है कि उसमें सही और गलत का विवेक धीरे-धीरे ख़त्म होता जा रहा है। ऐसे में विवेकहीन मनुष्य को गीता ही सही राह दिखाकर सच्चा इंसान बना सकती है।

कर्म करना हर मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है। बिना कर्म किये कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सफल नहीं हो सकता। आज का मनुष्य जो सुखी जीवन की बड़ी चाहत लिए खड़ा है, उसका मार्ग उसके कर्म में ही निहित है और उसे अपने कर्म के रहस्य को समझना होगा जो गीता के कर्मयोग के माध्यम से ही संभव है। इसमें भगवान श्रीकृष्ण ने मनुष्य को बिना फल प्राप्ति के कर्म करने का उपदेश दिया है क्योंकि जब मनुष्य बिना फल प्राप्ति के अपना कार्य कुशलतापूर्वक करता है, तब मनुष्य की सारी शक्तियाँ केन्द्रीभूत हो जाती है तथा आध्यात्मिक ऊर्जा उत्पन्न होती है क्योंकि बिना आध्यात्मिक ऊर्जा के मनुष्य अपने कर्म को श्रेष्ठ एवं उपयोगी नहीं बना सकता और इस ऊर्जा से जो कोई कर्म होता है, वो सिर्फ मानव जाति के लिए ही शुभ नहीं होता वरन् पूरे अस्तित्व के लिए हितकारी होता है। इसीलिए जरूरत है गीता के कर्मयोग के रहस्य को जानकार मानव जीवन को सुखद बनाया जाये। बदलते सामाजिक परिदृश्य में निष्काम कर्म गीता का संदेश आधुनिक परिप्रेक्ष्य में और प्रासंगिक है। याद रखिये आज हमारे देश को आपके सकारात्मक और निष्ठावान कर्म की अत्यधिक जरूरत है। ऐसा जरूरी नहीं है कि आप जो अपने देश के लिए अपने आप के सुधार के लिए आज प्रयास करेंगे उसका फल आप को आज ही मिल जाये। गीता में कहा गया है-

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भुमा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥४७॥'[5]

गीता में मानव-जीवन के सभी पक्षों हेतु संदेश निहित है। "कुछ विद्वानों का तो यहाँ तक मानना है कि श्रीमद्भगवद्गीता के मात्र दो श्लोक ही संपूर्ण जीवन को सही दिशा में परिवर्तित करने के लिए पर्याप्त हैं। गीता में वह शक्ति है जो हारे हुए निराश व्यक्ति को पुनः संपूर्ण बल एवं आशा के साथ खड़ा कर सकती है। यदि भारत गीता को आत्मसात कर आगे बढ़े तो वह फिर से विश्व गुरू का दर्ज़ा हासिल कर सकता है।"[6] चूँकि वेदों का सार पुराणों में है और पुराणों का सार श्रीमद्भगवद्गीता में समाहित है। इसलिए गीता विश्व का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है जिसमें इस धरा की हर समस्या का समाधान निहित है।

गीता का ज्ञान आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना हज़ारों साल पहले थी। गीता को लेकर आज देश-विदेश के तमाम विश्वविद्यालयों में शोध हो रहे हैं। इसमें मानव जीवन के मूल मर्म को खोजा जा रहा है। "श्रीमद्भागवद्गीता वर्तमान में धर्म से ज्यादा जीवन के प्रति अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को लेकर भारत में ही नहीं विदेशों में भी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही है। निष्काम कर्म का गीता का संदेश प्रबंधन गुरुओं को भी लुभा रहा है।"[7] शायद ही कोई क्षेत्र इसकी सीमा से बाहर हो। आज हमारा जीवन आधुनिकता से परिपूर्ण तो है, लेकिन संतुष्ट नहीं। कुछ नवीनतम आँकड़ों पर नज़र डालें तो पता चलता है कि "आज अमेरिका सबसे विकसित देश है जो वैज्ञानिक प्रगति एवं तमाम तरह के विकास-प्रतिमानों में उच्च शिखर पर विराजमान है। लेकिन इस देश के नागरिक सबसे ज्यादा भयभीत, हताश-निराश एवं विक्षिप्त हैं। यहाँ के नागरिकों को सोने के लिए नींद की गोलियाँ लेनी पड़ती है। इतनी सुविधाओं से युक्त जीवन होने पर भी आज मनुष्य बेचैनी, दुःख और संताप को झेल रहा है और एक गलत जगह पर जाकर खड़ा हो गया है। क्या मनुष्य से कहीं कोई चुक हो रही है?"[8] ये कुछ अनुत्तरित सवाल हैं जो हमें सोचने पर मज़बूर कर रहे हैं।

वर्तमान में हताश-निराश एवं कर्मपथ से विमुख हो रही युवा पीढ़ी के लिए श्रीमद्भगवद्गीता अंधेरे में एक रोशनी की तरह है। गीता में बताये रास्ते का अनुसरण

कर आज की युवा पीढ़ी आदर्श सिद्धांत और नैतिक मूल्यों का विकास कर समाज एवं देश के विकास में अपना योगदान दे सकती है। गीता का संदेश देश और काल से परे है। प्राचीन कालीन कृषि आधारित समाज से लेकर परवर्ती काल में वाणिज्य और उद्योग आधारित समाज तक और उसके बाद भी ज्ञान एवं तर्क आधारित समाज तक श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता हर युग में रही है और आगे भी बनी रहेगी।

आधुनिक युग में, पश्चिम में अमेरिका से लेकर पूर्व में जापान तक, योग की लोकप्रियता योगशास्त्र गीता की अंतर्राष्ट्रीय और युगातीत प्रासंगिकता को रेखांकित करती है। आज के डिजिटल युग में गीता के सन्देश को पूरे विश्व में प्रसारित करना और भी आसान हो गया है। पूरी मानवता के लिए योगशास्त्र गीता अत्यंत उपयोगी है। वैश्विक समुदाय 21 जून को 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय सहजता और शीघ्रता के साथ इसलिए कर पाया कि योग पूरी मानवता के कल्याण के लिए है। गीता समस्त विश्व के लिए आध्यात्मिक दीप स्तम्भ है। अध्यात्म भारत की आत्मा है जो पूरे विश्व के लिए भारत का अनमोल उपहार है। गीता भारतीय अध्यात्म का सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध ग्रंथ है। चूँकि अध्यात्म ज्ञान भारत के पास ही रहा है, इसलिए इस अमूल्य ज्ञान के सहारे वैश्विक पटल को एक नयी दिशा दिखाई जा सकती है।

विश्व की अनेक हस्तियाँ नास्तिक होते हुए भी श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति अपना उम्दा विचार रखती थी। इनमें अलबर्ट आइन्स्टीन, महात्मा गांधी, हेनरी डेविड थोरुआ, रुडोल्फ स्टेनर, रॉल्फ वाल्डो इमरसन, एल्डास हक्सले, कार्ल ज्यूंग, डॉ. अलबर्ट स्विट्जर, हर्मन हेस्से, एनी बेसेंट, सुनीता विलियम प्रमुख हैं। अलबर्ट आइन्स्टीन गीता से काफी प्रेरित थे। हालाँकि इसका कोई भी लिखित प्रमाण नहीं है। लेकिन कुछ स्रोतों के मुताबिक़ एक बार उन्होंने कहा था, "जब मैंने गीता पढ़ी और ये जाना कि ईश्वरने इस ब्रह्मांड की रचना कैसे की, तो मुझे बाकी सभी चीजें निरर्थक लगने लगीं।"[9] भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का एक प्रमुख और साहसिक चेहरा रहीं एनी बेसेंट का मानना था कि, "आध्यात्मिक व्यक्ति को वैरागी होने की आवश्यकता नहीं है। 'परमात्मा से मिलन' सांसारिक गतिविधियों के बीच रहते हुए भी प्राप्त किया जा सकता है। दरअसल भगवद्गीता के अनुसार इस रास्ते में बाँधा बाहर की दुनिया में नहीं बल्कि हमारे भीतर है।"[10] मशहूर जर्मन कवि, उपन्यासकार और पेंटर 'हरमन हेस' का कहना था कि, "भगवद्गीता की सबसे अच्छी खाशियत यह है कि यह जीवन के सही मायनों को पूरी वास्तविकता के साथ सामने रखती है।"[11] इसके अलावा और भी बहुत से विचारकों ने गीता की महत्ता के बारें में अपने विचार प्रकट किये हैं।

उन्नीसवीं सदी के मशहूर दर्शनशास्त्री और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता अल्बर्ट स्विट्जर का मानना था कि, "भगवद्गीता मनुष्य के जीवन पर बहुत गहरा असर डालती है। यह कर्मों के जरिये ईश्वर प्राप्ति का संदेश देती है।"[12] स्विस मनोवैज्ञानिक कार्ल जुंग का मानना था कि, "मनुष्य को उल्टे वृक्ष के रूप में प्रदर्शन की अवधारणा बहुत पहले से ही मौजूद थी जिसे बाद में सामने लाया गया। अपने वक्तव्यों में कही गई प्लेटों की वह बात कि मनुष्य सांसारिक नहीं बल्कि स्वर्गीय पौधा है, जो ब्रह्मांड से सींचित होता है। यह वैदिक अवधारणा है और गीता के 15वें अध्याय में इसे स्पष्ट तौर पर कहा गया है।"[13] उन्नीसवीं सदी के मशहूर अंग्रेजी साहित्यकार आल्डस हक्सले ने कहा था कि, "मनुष्य में मानव मूल्यों की समझ पैदा करने के लिए भगवद्गीता सर्वाधिक व्यवस्थित ग्रंथ है। शाश्वत दर्शन के विषय में यह अब तक की सबसे स्पष्ट और व्यापक प्रस्तुति है। यह सिर्फ भारत के लिए नहीं है बल्कि इसका जुड़ाव पूरी मानवता से है।"[14] उन्नीसवीं सदी के ही प्रसिद्ध साहित्यिक हस्ती इमर्सन का मानना था कि, "भगवद्गीता के साथ मेरा दिन शानदार बीता। यह अपने तरह की पहली पुस्तक है। यह किसी और समय और परिस्थितियों में लिखी गई, लेकिन आज के सवालों और समस्याओं के भी जवाब पूरी स्पष्टता के साथ देती है।"[15] ऑस्ट्रियाई दार्शनिक और साहित्यकार रूडोल्फ स्टीनर का मानना था कि, "भगवद्गीता जैसी अप्रितम रचना को समझने के लिए बस हमें स्वयं को उसके साथ लय बिठाने की जरूरत है।"[16] अमेरिकी निबंधकार हेनरी डेविड थोरुआ ने गीता को पढ़ने के बाद लिखा था कि, "गीता का एक-एक अक्षर आज के समाज में प्रासंगिक है।"[17] स्पष्ट है कि गीता हर युग में प्रासंगिक रही है।

श्रीमद्भगवद्गीता में "श्रीकृष्ण के उपदेश, ज्ञान, भक्ति और कर्म का सागर है। श्रीकृष्ण साक्षात् परब्रह्म और ईश्वर हैं। संसार के समस्त पदार्थों के बीज उन्हीं में निहित है। वे नित्यों के नित्य और जगत के सूत्रधार हैं। शास्त्रों में उन्हें साक्षात् व साकार ईश्वर कहा गया है। भारतीय चिंतन और धर्म का निचोड़ उनके उपदेश में समाहित है। श्रीमद्भगवद्गीता में समस्त संसार और मानव जाति के कल्याण का मार्ग छिपा है। गीता श्रीकृष्ण द्वारा मोहग्रस्त अर्जुन को दिया गया उपदेश है जिसमें विश्व संरचना एवं मानव जगत के कल्याण का सार तत्त्व निहित है।"[18] गीता महज उपदेश भरा ग्रंथ ही नहीं है बल्कि मानव इतिहास की सबसे महान सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक और राजनीतिक वार्ता भी है। संसार की समस्त शुभता गीता में निहित है। गीता का उपदेश जगत कल्याण का सात्विक मार्ग और परा ज्ञान का कुंड है।

आज वर्तमान जीवन में मनुष्य को जरूरत है-अपने भीतर और बाहर दोनों का संतुलन बनाने की। मनुष्य अपना ये संतुलन रोजमर्रा के काम करते हुए प्राप्त कर सकता है और अपने आप को रूपांतरित कर सकता है। श्रीमद्भगवद्गीता से शिक्षा लेकर मनुष्य लोभ, जलन, अहंकार, छल, कपट, स्वार्थ एवं कटुता से दूर होकर एक नवीन समाज की स्थापना कर सकेगा। इसके बाद उसका हर कर्म समस्त मानव जाति के लिए समृद्धि लाएगा। मनुष्य अपनी सारी बाहरी नई सुविधाओं के साथ आनंदमय नज़र आएगा और आज की वैश्विक समस्याएँ जैसे भूखमरी, सांप्रदायिक दंगे, युद्ध, देशों के बीच घातक अस्त्रों को बढ़ती होड़, नरसंहार, पारिवारिक झगड़े आदि समस्याओं से दूर होकर एक नया विकास होगा। बस जरूरत है श्रीमद्भगवद्गीता के बताएँ मार्ग पर चलकर अपने कार्य को आसक्तहीन हुए बिना करके उसे श्रेष्ठ बनाने की।

**सन्दर्भ**


1. भागीरथ दीक्षित, भगवद्गीता: एक नया अध्ययन**,** प्रथम संस्करण : 1987, नवभारत प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली, पृष्ठ-2
2. गूगल पर 'लोककल्याण का मार्ग है गीता' : https://www.ichowk.in/culture/bhagavad-gita-is-the-passage-of-welfare/story/1/5241.html; 17 दिसंबर 2016 को देखा गया।
3. वहीं
4. विकिपीडिया पर 'श्रीमद्भगवद्गीता' : https://hi.wikipedia.org/wiki/श्रीमद्भगवद्गीता; 17 फरवरी 2018 को देखा गया|
5. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 2, श्लोक 47
6. गूगल पर 'सोनीपत महोत्सव' : https//www.bhaskar.com/hariyana/sonipat/news/HAR-MAT-latest-sonipatnews; 17 अप्रैल 2018 को देखा गया|
7. विकीपीडिया पर 'श्रीमद्भगवद्गीता' : https://hi.wikipedia.org/wiki/श्रीमद्भगवद्गीता; 6 अगस्त 2016 को देखा गया
8. गूगल पर 'गीता के कर्मयोग की प्रासंगिकता' : https://www.anhadkriti.com/kirti-bhardwaj-essay-gItA-ke-karmyOg-kI-vartm An-jIvan-mein-prAsangiktA; 10 अप्रैल 2018 को देखा गया|
9. गूगल पर 'नवभारत टाइम्स' : https://navbharattimes.indiatimes.com/inspired-by-bhagavad-gita/-albert-einstien/photomazaashow/53260026.cms; 19 अप्रैल 2018 को देखा गया|
10. वहीं

11. वहीं
12. वहीं
13. वहीं
14. वहीं
15. वहीं
16. वहीं
17. गूगल पर 'अंतर्राष्ट्रीय हस्तियाँ के गीता पर विचार' : https://www.gazabpost.com/non-indians-isnpired-by-bhagavada-gita/; 16 अप्रैल 2018 को देखा गया|
18. गूगल पर 'गीता का वचनसार': http://www.ichowk.in/culture/bhagavad-gita-is-the-passage-of-welfare/story/1/5241.html; 13 अप्रैल 2018 को देखा गय|